अंग्रेजी व्याकरण सीखने के लिए रचनावादी शिक्षण

देवेन्द्र कुमार यादव*
शिरीष पाल सिंह**

प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी व्याकरण सीखने के लिए रचनावादी शिक्षण का अनुप्रयोग किया गया है। इस शोध में उद्देश्यपूर्ण न्यादर्शन तकनीकी के माध्यम से उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद प्रयागराज द्वारा संचालित माँ शारदा इंटर कॉलेज जलालाबाद, गाजीपुर में पढ़ने वाले सत्र 2020–21 के कक्षा 9 के 140 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया है। शोध में पूर्व परीक्षण, पश्च परीक्षण गैर समतुल्य अर्द्ध-प्रायोगिक अभिकल्प समूह का प्रयोग किया गया है। प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थियों को रचनावादी शिक्षण एवं नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों को परंपरागत विधि की सहायता से पढ़ाया गया। प्रयोगात्मक समूह में कुल 70 विद्यार्थी एवं नियंत्रित समूह में भी कुल 70 विद्यार्थी सम्मिलित थे। आँकड़ों के संकलन हेतु स्वनिर्मित अंग्रेजी व्याकरण उपलब्धि परीक्षण एवं व्यक्तित्व परीक्षण का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों का विश्लेषण एक मार्गीय एवं द्विमार्गीय सह-प्रसरण विश्लेषण सांख्यिकी विधि की सहायता से किया गया है। शोध निष्कर्ष में परंपरागत विधि की तुलना में रचनावादी शिक्षण अधिक प्रभावी पाया गया एवं अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी विद्यार्थियों के अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

भाषा मनुष्य की भावनाओं एवं विचारों को अभिव्यक्त करने का वह माध्यम है, जिससे वह एक दूसरे से सूचनाओं को आदान-प्रदान करते हुए सभी सामाजिक गतिविधियों का निष्पादन करता है। दुनिया में विभिन्न प्रकार की भाषाएँ बोली जाती हैं, किंतु सभी भाषाओं के मध्य अंग्रेजी भाषा अपना अद्वितीय स्थान रखती है। अंग्रेजी विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। अधिकांश उच्च कोटि की शोध पत्रिकाएँ अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित होती हैं। भारत में उच्चतम एवं उच्च न्यायालय की भाषा भी अंग्रेजी ही है। किसी भाषा की अनदेखी करके कोई भी राष्ट्र कंधे से कंधा मिलाकर नहीं चल सकता। सहज जीवनयापन के लिए प्रत्येक व्यक्ति को भाषा के माध्यम से ही अपनी अभिव्यक्ति प्रकट करनी पड़ती है। दुनिया में सभी भाषाओं के मध्य अंग्रेजी भाषा में विज्ञान, तकनीकी, चिकित्सा एवं सामाजिक विज्ञान के संवृद्ध

**शोधार्थी*, शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा, महाराष्ट्र
** *प्रोफेसर*, शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा, महाराष्ट्र

साहित्य उपलब्ध हैं और मीडिया रिपोर्ट के अनुसार 50 प्रतिशत समाचारपत्र एवं समकालिक वैज्ञानिक पत्रिकाओं का प्रकाशन अंग्रेजी भाषा में ही होता है। दुनिया के 60 प्रतिशत से अधिक रेडियो स्टेशन अंग्रेजी भाषा में ही संचालित होते हैं (पूनम, 2018)। अंग्रेजी अक्सर दुनिया की महत्वपूर्ण भाषा मानी जाती है, जिसमें संचार एवं शैक्षिक मूल्य निहित हैं, जो हमें ज्ञान, शक्ति एवं भौतिक संपदा की ओर अग्रसर करती है। समय-समय पर विभिन्न शिक्षा आयोगों द्वारा अंग्रेजी भाषा के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 ने बच्चों के संज्ञानात्मक विकास हेतु द्विभाषिता एवं बहुभाषिता पर बल दिया है। राष्ट्रीय ज्ञान आयोग (2006–2007) ने अपने प्रतिवेदन में जोर देकर कहा कि संसार के साथ कदम मिलाकर चलने के लिए आधुनिक ज्ञान एवं कौशल प्राप्त करना आवश्यक है। आयोग ने सिफारिश की थी कि स्कूली शिक्षा में प्रथम कक्षा से ही मातृभाषा (क्षेत्रीय भाषा) के साथ अंग्रेजी की शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जाए (लाल, 2013)। इस तरह हम देखते हैं कि हिंदी के ज्ञान के साथ-साथ अंग्रेजी का ज्ञान भी आवश्यक है। किसी भी भाषा का शुद्ध उच्चारण, प्रयोग एवं लेखन व्याकरण द्वारा ही संभव है। अंग्रेजी भाषा के संवर्धन एवं विकास हेतु हमें अपनी कक्षाओं की शिक्षण प्रणाली को नवाचारी बनाना चाहिए। भाषा-शिक्षण भाषा की संरचनात्मकता को प्राथमिकता देकर उसके एकार्थक स्वरुप पर बल देता है। भाषा की स्पष्टता तथा संक्षिप्तता अधिक महत्वपूर्ण हो गई है, जिसके फलस्वरूप यह अपेक्षा की जाती है कि भाषा भी गणित के समान नपी-तुली संरचनायुक्त हो तथा इसे निर्धारित सूत्रों के माध्यम से अधिगत किया जा सके। एक तरह से देखें तो भाषा शिक्षण केवल भाषा की कक्षा तक सीमित नहीं होता। विज्ञान, सामाजिक विज्ञान या गणित की कक्षाएँ भी एक तरह से भाषा की ही कक्षाएँ होती हैं (एन.सी.एफ., 2005)। किसी विषय को सीखने का मतलब है उसकी अवधारणाओं को सीखना, उसकी शब्दावली को सीखना, उनके बारे में आलोचनात्मक ढंग से चर्चा करना और उनके बारे में लिख सकना। इसके साथ ही, भाषा की शिक्षा कुछ अनूठे अवसर उपलब्ध कराती है। कहानी, कविता, गीतों और नाटकों के माध्यम से बच्चे अपनी सांस्कृतिक धरोहर से जुड़ते हैं और इससे उनको अपने अनुभव विकसित करने और दूसरों के प्रति संवेदनशील होने के अवसर मिलते हैं। इस प्रकार की गतिविधियों के माध्यम से व्याकरण भी अधिक आसानी से सीख सकते हैं, जो रचनावादी शिक्षण द्वारा संभव है। इन सभी गतिविधियों का समावेशन रचनावादी शिक्षण में होता है। इसलिए भाषा शिक्षण में हमें रचनावादी शिक्षण रणनीतियों का अनुप्रयोग करना चाहिए।

रचनावादी शिक्षण

रचनावादी विचारधारा के प्रवर्तक के रूप में सुप्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक जीन पियाजे को माना जाता है जिन्होंने संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत एवं अधिगम के प्रति व्यवहारवादी विचारधारा से अलग मनोविज्ञान में संज्ञानवादी विचारधारा की नींव रखी। वस्तुतः जीन पियाजे ने व्यवहारवादी मान्यता कि बालक

सिर्फ वातावरण से सीखता है, की बजाय यह माना कि बालक के अधिगम में वातावरण के साथ-साथ उसकी संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं का योगदान भी रहता है। इस प्रकार वातावरण एवं मानसिक संरचनाओं की पारस्परिक अंतःक्रिया बालक के अधिगम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। दूसरे महत्वपूर्ण रचनावादी मनोवैज्ञानिक लेव वाईगोत्सकी ने इस मान्यता को खारिज किया कि बालक सिर्फ मानसिक प्रक्रियाओं एवं वातावरण की अंतःक्रिया से सीखता है। पियाजे से अलग वाईगोत्सकी ने बताया कि अधिगम हमेशा सामाजिक सांस्कृतिक वातावरण में होता है। अतः अधिगम को हमेशा सांस्कृतिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिए। उन्होंने बताया कि बालक के अधिगम में उसके समाज एवं संस्कृति की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इस प्रकार यहाँ पर रचनावादी दृष्टिकोण दो विचारधाराओं में बँट गया। पहला संज्ञानवादी रचनावादी जिसके प्रवर्तक एवं समर्थक प्रसिद्ध विद्वान जीन पियाजे, ब्रूनर, गेने आदि रहे और दूसरा सामाजिक-सांस्कृतिवादी जिसके प्रबल प्रवर्तक एवं समर्थक वाईगोत्सकी रहे। रचनावाद के अनुसार प्रत्येक शिक्षार्थी स्वयं ज्ञान का निर्माण करता है। रचनावादी परिप्रेक्ष्य के अंतर्गत छात्र एक कोरी स्लेट नहीं होता, बल्कि वह अपने साथ पूर्व अनभुव लाता है। वह किसी परिस्थिति के सांस्कृतिक तत्व और पूर्व ज्ञान के आधार पर ज्ञान का निर्माण करता है। रचनावादी परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों की समालोचनात्मक चिंतन व अभिप्रेरणा को विकसित कर उन्हें स्वतंत्र अधिगमकर्ता के रूप में ढाला जाता है। रचनावादी परिप्रेक्ष्य में शिक्षण युक्तियाँ व गतिविधियाँ अधिगम प्रक्रिया पर आधारित होती हैं। रचनावादी परिप्रेक्ष्य का केंद्र है छात्र सशक्तिकरण, जैसे— अभिभावक बालक के जन्म के बाद उसके स्वतंत्र जीवनयापन के लिए हर संभव आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं, वैसे ही रचनावादी परिप्रेक्ष्य का उद्देश्य अधिगमकर्ता का निर्माण करना होता है और बालक उसी के लिए प्रयासरत रहता है। विद्यार्थी ज्ञान की रचना वातावरण से अंतःक्रिया करते हुए अपने अनुभवों द्वारा स्वयं करता है। शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में विद्यार्थी पूर्व ज्ञान के आधार पर वर्तमान अधिगम से साहचर्य स्थापित करते हुए सीखता है। रचनावाद वास्तव में एक सिद्धांत है जो अवलोकन और वैज्ञानिक अध्ययन पर आधारित है, जिसमें व्यक्ति कैसे सीखता है, यह ज्ञात होता है। अधिगमकर्ता कुछ गतिविधियों को करते हुए सीखता है एवं सीखे हुए ज्ञान पर आपस में अंतःक्रिया करके अपनी समझ को विकसित करता है जो अधिगमकर्ता में झलकती है।

परंपरागत विधि

परंपरागत विधि में शिक्षण शिक्षक केंद्रित होता है। विद्यार्थियों को अंतःक्रिया करने हेतु अवसर ही नहीं दिया जाता है। शिक्षक पूरे विश्वास के साथ शिक्षण कार्य करता है और यह समझता है कि विद्यार्थियों को आसानी से समझ में आ रहा है। शिक्षक की यही सोच विद्यार्थियों की अधिगम गति में अवरोधक बन जाती है। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि परंपरागत विधि से रटंत प्रणाली को बढ़ावा मिलता है। शिक्षक का प्रथम कर्तव्य यह होता है कि वह

विद्यार्थियों की अंतर्निहित क्षमताओं को विकसित करे। शिक्षण अधिगम के दौरान शिक्षक को ऐसे अवसर प्रदान कराने चाहिए, जिससे विद्यार्थियों का अधिगम स्थायी एवं सरल हो जाए। एक शिक्षक को पाठ्यवस्तु का ज्ञान होना तो आवश्यक है, किंतु इसके साथ ही शिक्षणशास्त्र का ज्ञान भी होना चाहिए। यदि हमारी शिक्षण विधि सार्थक है तो अधिगम रोचक, सरल एवं सहज हो जाता है।

शोध का औचित्य

माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–1953) ने अपने प्रतिवेदन में कहा था कि "पाठ्यक्रम कितना भी श्रेष्ठ एवं वैज्ञानिक बनाया जाए, जब तक अच्छी शिक्षण विधि का प्रयोग अच्छे शिक्षक द्वारा नहीं किया जाता, सब व्यर्थ है।" शिक्षण का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी के व्यवहार में परिवर्तन लाना होता है। यह तभी संभव है जब शिक्षण नियोजन में ऐसी व्यूह रचनाओं का समावेश हो जिससे विद्यार्थी में जिज्ञासा बनी रहे, इसलिए हमें नवाचारी शिक्षण पद्धति का अनुप्रयोग करना चाहिए। नवाचारी शिक्षण पद्धति में रचनावादी शिक्षण का सबसे प्रमुख स्थान है। पूर्ववर्ती शोध परिणामों से यह ज्ञात होता है कि विज्ञान, गणित एवं सामाजिक विज्ञान की कक्षा में रचनावादी शिक्षण का विद्यार्थियों की उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वे (2015) इस बात की ओर इशारा करता है कि माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी भाषा की उपलब्धि निम्न स्तर की है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा संपादित पोजीशन पेपर में अंग्रेजी शिक्षण हेतु रचनावादी उपागम का सुझाव दिया गया है। रचनावादी शिक्षण रटंत अधिगम (Rote learning) का समर्थन नहीं करता है। अंग्रेजी भाषा एवं रचनावादी शिक्षण से संबंधित विभिन्न शोधकर्ताओं जैसे— कोकसाल (2009), यिजीत (2011), ओझा, आर्य और शेखर (2015), विलनुएवा (2016), देव (2016), नोघाभी और अशरफ (2017), बाड़ोला (2017), शर्मा और पूनम (2017), रामदास और शर्मा (2018), पूनम (2018), मोना (2018), तिवारी और सिरोही (2019), अल्कोगवा और ओफोरमा (2020) के शोधों से ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों की उपलब्धि पर रचनावादी शिक्षण का सार्थक प्रभाव पड़ता है, किंतु अंग्रेजी व्याकरण एवं रचनावादी शिक्षण से संबंधित विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के आधार पर शोध नहीं हुए हैं, इसलिए शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन का चयन किया गया है।

समस्या कथन

माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी व्याकरण सीखने के लिए रचनावादी शिक्षण।

शोध उद्देश्य

1. कक्षा 9 के विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में पूर्व-उपलब्धि को सहचर लेकर रचनावादी शिक्षण एवं परंपरागत विधि द्वारा पढ़ाए गए विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में उपलब्धि के समायोजित माध्य फलांकों की तुलना करना।
2. कक्षा 9 के विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में पूर्व-उपलब्धि को सहचर लेकर विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में उपलब्धि पर उपचार,

व्यक्तित्व एवं इनकी अंत:क्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

1. कक्षा 9 के विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में पूर्व उपलब्धि को सहचर लेकर रचनावादी शिक्षण एवं परंपरागत विधि द्वारा पढ़ाए गए विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में उपलब्धि के समायोजित माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. कक्षा 9 के विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में पूर्व उपलब्धि को सहचर लेकर की विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में उपलब्धि पर उपचार, व्यक्तित्व एवं इनकी अंत:क्रिया का अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध में जनसंख्या के रूप में उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद प्रयागराज द्वारा संचालित गाजीपुर जिले में अध्ययनरत कक्षा 9 के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श एवं न्यादर्शन तकनीकी

प्रस्तुत शोध में उद्देश्यपूर्ण न्यादर्शन तकनीकी से उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद प्रयागराज द्वारा संचालित माँ शारदा इंटर कॉलेज जलालाबाद, गाजीपुर में पढ़ने वाले सत्र 2020–2021 के कक्षा 9 के 140 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध मात्रात्मक विधि पर आधारित है एवं शोधकर्ता द्वारा प्रयोगात्मक शोध का प्रयोग किया गया है। इस शोध में कारण एवं प्रभाव का अध्ययन किया गया है। आश्रित चर पर स्वतंत्र चर का कितना प्रभाव पड़ा, यह देखने का प्रयास किया गया है।

शोध अभिकल्प

प्रस्तुत शोध में पूर्व परीक्षण-पश्च परीक्षण गैर समतुल्य अर्द्ध-प्रायोगिक अभिकल्प समूह का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा निर्मित रचनावादी पाठ योजना, अंग्रेजी व्याकरण उपलब्धि परीक्षण एवं विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को जानने के लिए शर्मा, अशोक एवं मीनू अग्रवाल (2002) द्वारा मानकीकृत व्यक्तित्व परीक्षण का उपयोग किया गया है। यह व्यक्तित्व परीक्षण 13 से 20 वर्ष के विद्यार्थियों के लिए निर्मित किया गया है। इस परीक्षण में कुल 60 पद हैं। 30 पद अंतर्मुखी एवं 30 पद बहिर्मुखी व्यक्तित्व से संबंधित हैं।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं निर्वचन

प्रथम उद्देश्य

कक्षा 9 के विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में पूर्व-उपलब्धि को सहचर लेकर रचनावादी शिक्षण एवं परंपरागत विधि द्वारा पढ़ाए गए विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में उपलब्धि के समायोजित माध्य फलांकों की तुलना करने के लिए एक-मार्गीय सह प्रसरण विश्लेषण (One-Way Analysis of Covariance ANCOVA)

तालिका 1

स्रोत	वर्गों का योग	स्वतंत्र्यांश	माध्यों का वर्ग	एफ मान	सार्थकता	टिप्पणी	प्रभाव आकार
संशोधित मॉडल	5480.027	2	2740.013	129.330	.000		.654
	4966.805	1	4966.805	234.436	.000		.631
पूर्व-उपलब्धि	184.877	1	184.877	8.726	.004		.060
उपचार	5367.744	1	5367.744	253.360	.000	< 0.01	.649
त्रुटि	2902.509	137	21.186				
कुल योग	224847.000	140					

विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि पर उपचार का प्रभाव

तालिका 1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि अंग्रेजी व्याकरण की पूर्व-उपलब्धि को सहचर लेकर उपचार के समायोजित एफ का मान 253.360 है एवं स्वतंत्र्यांश (1,137) पर सार्थकता मान 0.000 है। यह मान 0.000 < 0.01 से कम है। यह मान सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक है। इस संदर्भ में शून्य परिकल्पना 'विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में पूर्व-उपलब्धि को सहचर (covariate) लेकर रचनावादी शिक्षण एवं परंपरागत विधि द्वारा पढ़ाए गए विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में उपलब्धि के समायोजित माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है, निरस्त की जा सकती है।' अतः हम कह सकते हैं कि विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण की पूर्व-उपलब्धि को सहचर लेकर रचनावादी शिक्षण एवं परंपरागत विधि से पढ़ाने के पश्चात प्रयोगात्मक एवं नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर है। उक्त परिणाम के आधार पर कहा जा सकता है कि रचनावादी शिक्षण एवं परंपरागत विधि से पढ़ाने पर विद्यार्थियों की उपलब्धि के माध्य फलांको में अंतर पाया गया।

तालिका 1 की अंतिम पंक्ति में 'पारशियल ईटा स्कवायर' दर्शाया गया है जो उपचार के प्रभाव आकार का वर्णन करता है। इससे यह पता चलता है कि आश्रित चर के कितने प्रतिशत प्रसरण की व्याख्या करने में स्वतंत्र चर (उपचार) सक्षम हैं। उपचार के प्रभाव आकार का मान .649 है। अतः हम कह सकते है कि विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि के माध्य फलांकों में 64.9 प्रतिशत प्रसरण हेतु उपचार एवं उससे संबंधित त्रुटि उत्तरदायी है।

रचनावादी शिक्षण एवं परंपरागत विधि में से कौन-से समूह के विद्यार्थियों की उपलब्धि उच्च है। इसकी व्याख्या प्रयोगात्मक एवं नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की उपलब्धि के समायोजित माध्य फलांको द्वारा की गई है।

तालिका 2— प्रयोगात्मक एवं नियंत्रित समूह के समायोजित अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि का माध्य फलांक

उपचार	माध्य
प्रयोगात्मक	45.519
नियंत्रित	33.124

तालिका 2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि के समायोजित माध्य फलांक का मान 45.519 है एवं नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि के समायोजित माध्य फलांक का मान 33.124 है। प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि के समायोजित माध्य फलांक का मान तुलनात्मक रूप से नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि के समायोजित माध्य फलांक के मान से सार्थक रूप से अधिक है जिसकी पुष्टि उपचार के प्रभाव आकार से भी होती है। उक्त निष्कर्ष के आधार पर कहा जा सकता है कि कक्षा 9 के विद्यार्थियों को जब रचनावादी शिक्षण के माध्यम से पढ़ाया गया तो परंपरागत विधि से पढ़ने वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि से रचनावादी शिक्षण से पढ़ने वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि सार्थक रूप से अधिक पाई गई।

उद्देश्य द्वितीय

कक्षा 9 के विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में पूर्व-उपलब्धि को सहचर लेकर विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में उपलब्धि पर उपचार, व्यक्तित्व एवं इनकी अंत:क्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध के द्वितीय उद्देश्य की पूर्ति हेतु अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि पर उपचार, व्यक्तित्व एवं इनकी अंत:क्रिया के प्रभाव का अध्ययन हेतु 2 × 2 कारकीय आकल्प सहप्रसरण विश्लेषण (2 × 2 Factorial Design Analysis of Covariance) का उपयोग किया गया है। 2 × 2 कारकीय आकल्प सहप्रसरण विश्लेषण प्रयुक्त करने के पूर्व इसकी सभी अवधारणाओं का परीक्षण किया गया है। सभी अवधारणाओं की पुष्टि होने के पश्चात ही सहप्रसरण विश्लेषण के माध्यम से आँकड़ों का विश्लेषण किया गया है। यहाँ उपचार के दो स्तर प्रथम रचनावादी शिक्षण एवं द्वितीय परंपरागत विधि है एवं व्यक्तित्व के भी दो स्तर बहिर्मुखी एवं अंतर्मुखी हैं, इसलिए 2 × 2 कारकीय आकल्प सहप्रसरण विश्लेषण (2 × 2 Factorial Design Analysis of Covariance) का उपयोग किया गया है।

कक्षा 9 के विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में पूर्व-उपलब्धि को सहचर लेकर विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में उपलब्धि पर उपचार, व्यक्तित्व एवं इनकी अंत:क्रिया के समायोजित माध्य फलांकों की तुलना हेतु द्विमार्गीय सहप्रसरण विश्लेषण का सारांश

तालिका 3

स्त्रोत	वर्गों का योग	स्वतंत्र्यांश	माध्यों का वर्ग	एफ मान	सार्थकता	टिप्पणी	प्रभाव आकार
संशोधित मॉडल	5487.288	4	1371.822	63.966	.000		.655
	4945.103	1	4945.103	230.581	.000		.631
पूर्व-उपलब्धि	182.651	1	182.651	8.517	.004		.059
व्यक्तित्व	.120	1	.120	.006	.941	>0.01	.000

उपचार	5330.024	1	5330.024	248.529	.000	<0.01	.648
उपचार* व्यक्तित्व	7.133	1	7.133	.333	.565	>0.01	.002
त्रुटि	2895.248	135	21.446				
कुलयोग	224847.000	140					

*अंत:क्रिया प्रभाव

विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि पर व्यक्तित्व का प्रभाव

तालिका 3 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि स्वतंत्र्यांश (1,135) व्यक्तित्व के अनुसार समायोजित एफ का मान .006 एवं सार्थकता का मान .941 है। यह मान .941 > 0.01 से अधिक है। अतः सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है। इस संदर्भ में शून्य परिकल्पना, 'विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में पूर्व-उपलब्धि को सहचर लेकर व्यक्तित्व का अंग्रेजी व्याकरण में उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है' अस्वीकृत नहीं की जा सकती है। अतः हम कह सकते है कि बहिर्मुखी एवं अंतर्मुखी विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है जिसकी पुष्टि उपचार के प्रभाव आकार से भी होती है। प्रभाव आकार का मान 0.000 है, जिसके आधार पर हम कह सकते हैं कि विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि फलांकों में व्यक्तित्व का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि पर उपचार का प्रभाव

तालिका 3 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि स्वतंत्र्यांश (1,135) पर उपचार हेतु समायोजित एफ का मान 248.529 एवं सार्थकता मान 0.000 है। यह मान 0.00 < 0.01 से कम है। अतः सार्थकता 0.01 स्तर पर यह मान सार्थक है। इस संदर्भ में शून्य परिकल्पना 'विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में पूर्व-उपलब्धि को सहचर लेकर विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में उपलब्धि पर उपचार का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है' अस्वीकृत की जा सकती है अर्थात हम कह सकते हैं कि विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि पर उपचार का सार्थक प्रभाव पड़ता है। उक्त परिणाम की पुष्टि उपचार के प्रभाव आकार से भी होती है। प्रभाव आकार का मान .648 है, इस आधार पर हम कह सकते हैं कि विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि फलांकों में 64.8 प्रतिशत प्रसरण हेतु उपचार एवं उससे संबंधित त्रुटि उत्तरदाई है। अतः हम कह सकते है कि विद्यार्थियों को यदि रचनावादी शिक्षण के माध्यम से पढ़ाया जाए तो अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि पर उपचार, व्यक्तित्व एवं इनकी अंतःक्रिया का प्रभाव

तालिका 3 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि स्वतंत्र्यांश (1,135) पर उपचार एवं व्यक्तित्व की अन्तःक्रिया हेतु समायोजित एफ .333 है एवं

सार्थकता का मान .565। यह मान .565 > 0.01 से अधिक है। अतः सार्थकता के 0.01 स्तर पर यह मान सार्थक नहीं है। इस संदर्भ में शून्य परिकल्पना 'कक्षा 9 के विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में पूर्व-उपलब्धि को सहचर लेकर की विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में उपलब्धि पर उपचार, व्यक्तित्व एवं इनकी अंतःक्रिया का अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है'। यहाँ शून्य परिकल्पना अस्वीकृत नहीं की जा सकती है। अतः हम कह सकते हैं कि विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि पर उपचार एवं व्यक्तित्व की अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। उपचार के प्रभाव आकार का मान 0.002 है, जिसके आधार पर हम कह सकते हैं कि .2 प्रतिशत प्रसरण हेतु उपचार तथा व्यक्तित्व एवं इससे संबंधित त्रुटि उत्तरदाई है। जिसके आधार पर कहा जा सकता है कि विद्याथियों की उपलब्धि निर्धारण में व्यक्तित्व की कोई भूमिका नहीं होती है।

विवेचना

शोध उद्देश्य के अनुरूप प्राप्त परिणामों की विवेचना निम्नलिखित रूप से की गई है—

कक्षा 9 के विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में पूर्व-उपलब्धि को सहचर लेकर रचनावादी शिक्षण एवं परंपरागत विधि द्वारा पढ़ाए गए विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में उपलब्धि के समायोजित माध्य फलांकों की तुलना करना।

प्रस्तुत शोध के प्रथम उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थियों को रचनावादी शिक्षण एवं नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों को परंपरागत विधि की सहायता से पढ़ाया गया। उपचार के पश्चात यह पाया गया कि रचनावादी शिक्षण एवं परंपरागत विधि द्वारा पढ़ाए गए विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में उपलब्धि के समायोजित माध्य फलांकों में सार्थक अंतर है। इस आधार पर देखा गया कि जब दोनों समूह के विद्यार्थियों की पूर्व उपलब्धि को सहचर लेकर उपचार दिया गया तो प्रयोगात्मक एवं नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों के समायोजित माध्य फलांकों में अंतर मिलता है। दोनों समूह में से किस समूह के विद्यार्थियों ने अच्छा निष्पादन किया, इस तथ्य की पुष्टि हेतु दोनों समूह के विद्यार्थियों के समायोजित माध्य फलांकों का अवलोकन किया गया। अवलोकन के पश्चात यह पाया गया कि प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थियों के माध्य फलांक नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों के माध्य फलांक से अधिक हैं। इस तथ्य के आधार पर कहा जा सकता है कि जब विद्यार्थियों को अंग्रेजी व्याकरण रचनावादी शिक्षण के माध्यम से पढ़ाया गया तो उनकी उपलब्धि परंपरागत विधि से पढ़ाए गए विद्यार्थियों की उपलब्धि से अधिक थी। पूर्ववर्ती शोध के परिणाम भी हमारे शोध परिणाम के समान ही प्राप्त हुए हैं। कोकसाल (2009), यिजीत (2011), ओझा, आर्य और शेखर (2015), विलनुएवा (2016), देव (2016), नोघाभी और अशरफ (2017), बाड़ोला (2017), शर्मा और पूनम (2017), रामदास और शर्मा (2018), पूनम (2018), मोना (2018), तिवारी और सिरोही (2019), अल्कोगवा और ओफोरमा (2020) ने भी अंग्रेजी भाषा एवं रचानावाद पर शोध किया और शोध परिणाम में पाया गया कि विद्यार्थियों की उपलब्धि पर रचनावादी शिक्षण का सार्थक प्रभाव पड़ता है। उक्त तथ्य के आधार पर यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी व्याकरण शिक्षण हेतु

रचनावादी शिक्षण का प्रयोग किया जाए तो सार्थक परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

कक्षा 9 के विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में पूर्व उपलब्धि को सहचर लेकर विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में उपलब्धि पर उपचार, व्यक्तित्व एवं इनकी अंतःक्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध के द्वितीय उद्देश्य की पूर्ति हेतु अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि पर उपचार, व्यक्तित्व एवं इनकी अंतःक्रिया के प्रभाव का अध्ययन किया गया। शोध परिणाम में पाया गया कि कक्षा 9 के विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में पूर्व-उपलब्धि को सहचर लेकर विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में उपलब्धि पर उपचार, व्यक्तित्व एवं इनकी अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। उक्त परिणाम की पुष्टि पूर्ववर्ती शोधों से भी होती है। शिंदे (2007) और शर्मा (2013) ने अपने शोध परिणाम में पाया कि पूर्व-उपलब्धि को सहचर लेकर विद्यार्थियों की उपलब्धि पर उपचार, व्यक्तित्व एवं इनकी अंतःक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। उक्त परिणाम के आधार पर कहा जा सकता है कि यदि हमारी शिक्षण विधि प्रभावी हो तो विद्यार्थी चाहे अंतर्मुखी अथवा बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाला हो, उसकी उपलब्धि पर उपचार, व्यक्तित्व एवं इनकी अंतःक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोध निष्कर्ष

1. कक्षा 9 के विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में पूर्व-उपलब्धि को सहचर (covariate) लेकर विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में उपलब्धि पर रचनावादी शिक्षण का सार्थक प्रभाव पड़ता है।
2. कक्षा 9 के विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में पूर्व-उपलब्धि को सहचर लेकर विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में उपलब्धि पर व्यक्तित्व का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
3. कक्षा 9 के विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में पूर्व-उपलब्धि को सहचर लेकर विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण में उपलब्धि पर उपचार, व्यक्तित्व एवं इनकी अंतःक्रिया का अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

शैक्षिक निहितार्थ

अधिगम की प्रक्रिया में विद्यार्थी निष्क्रिय होकर ज्ञान अधिग्रहण नहीं कर सकता है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थी को सक्रियता से भाग लेना चाहिए। रचनावादी शिक्षण में विद्यार्थियों को सक्रिय रूप से सहभागिता हेतु पर्याप्त अवसर दिया जाता है, ताकि वह पूर्व-ज्ञान के आधार पर नए ज्ञान का निर्माण स्वयं कर सके। वह इस ज्ञान का उपयोग अपने दैनिक जीवन में भी करता है, जिससे सार्थक परिणाम प्राप्त हो सकें। यहाँ शिक्षक एवं विद्यार्थियों के मध्य अंतःक्रिया और शिक्षक विद्यार्थियों की सहायता ही नहीं करता, बल्कि उनके भ्रम को भी दूर करता है। रचनावादी शिक्षण में विद्यार्थी स्वमूल्यांकन द्वारा अंग्रेजी व्याकरण की त्रुटियों को दूर करने में भी सक्षम हो जाते हैं। रचनावादी शिक्षक को अपने विद्यार्थियों की पूर्व-सृजित समझ या ज्ञान को समझना अति आवश्यक है। शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में शिक्षक सुविधा प्रदाता की भूमिका का निर्वहन तभी कर सकता है, जब वह अपने विद्यार्थियों के कमजोर एवं मजबूत पहलू को जानता

हो। विद्यार्थी कितना वांछित अधिगम की प्राप्ति करते हैं, यह शिक्षक के अधिगम परिस्थिति के निर्माण एवं नवाचारी अधिगम प्रदत्त कार्यों का कक्षा में अनुप्रयोग के ऊपर निर्भर करता है। सुविधा प्रदाता की भूमिका में शिक्षक को प्रत्येक समूह के विद्यार्थियों का मार्ग निर्देशन करते हुए उनके दैनिक जीवन के अनुभवों तथा पूर्व-सृजित ज्ञान को आधार बनाकर स्वयं को अधिगम प्रक्रिया का हिस्सा बनाना चाहिए।

संदर्भ

अल्कोगवा, ए.सी. और जी.सी. ओफोरमा. 2020. इफेक्ट ऑफ कन्स्ट्रक्टिविस्ट बेस्ड इंस्ट्रक्शन मेथड ऑन सीनियर सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स अचीवमेंट इन इंग्लिश लैंग्वेज एस्से राइटिंग. *जर्नल ऑफ दि नाइजीरियन अकैडमी ऑफ एजुकेशन*. 14(2), पृ.सं. 1–10.

ओझा, एन.सी., आर. आर्य और आर. शेखर. 2015. कंस्ट्रक्टीव एप्रोच एंड ट्रेडिशनल एप्रोच ऑफ टीचिंग इंग्लिश टू क्लास VI इन टर्म्स ऑफ अचीवमेंट ए कम्परेटिव स्टडी. *पेडागॉजी ऑफ लर्निंग*. 1(1), पृ.सं. 25–37.

कोकसाल, एच.ओ. 2009. टीचिंग टेंसेस इन इंग्लिश टू द स्टूडेंट्स ऑफ द सेकेंड स्टेज ऐट प्राइमरी एजुकेशन थ्रू यूजिंग 5E मॉडल इन कन्स्ट्रक्टिविस्ट एप्रोच. *अप्रकाशित पीएच.डी. शोध प्रबंध*. डिपार्टमेंट ऑफ टर्किश लैंग्वेज, सेलकुक यूनिवर्सिटी, केन्या.

तिवारी, आर. और एस. सिरोही. 2019. इफेक्ट ऑफ कन्स्ट्रक्टिविस्ट एप्रोच इन टीचिंग इंग्लिश ग्रामर टू स्कूल लेवल मेल स्टूडेंट्स ऑफ जबलपुर डिस्ट्रिक्ट. *जर्नल ऑफ. डी.ओ.आई.* 44975451.

नोघाभी, एन.जी. और एच. अशरफ. 2017. इफेक्ट ऑफ इंप्लिमैन्टेशन ऑफ 5E टीचिंग मॉडल ऑन ईरानियन ई.एफ़.एल. लर्नर्स लिस्निंग एंड स्पीकिंग स्किल्स. *ई-प्रोसीडिंग ऑफ द 5th ग्लोबल सम्मिट ऑन एजुकेशन जी.एस.इ.* http://worldconferences.net/

पूनम. 2018. इफेक्ट ऑफ कन्स्ट्रक्टिविस्ट इंस्ट्रक्शनल मॉडल ऑन अचीवमेंट एंड रिटेंशन ऑफ हाईस्कूल स्टूडेंट्स इन इंग्लिश. *अप्रकाशित पीएच.डी. शोध प्रबंध*. शिक्षा विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक, हरियाणा.

बाड़ोला, के. 2017. करेक्टरिस्टिक ऑफ कन्स्ट्रक्टिविस्ट क्लासरूम ऑफ इंग्लिश एजुकेशन. *शिक्षा शोध मंथन*. 4(1), पृ.सं. 180–185.

मोना. 2018. इफेक्ट ऑफ कोऑपरेटिव लर्निंग ऑन पीयर ग्रुप रिलेशन, सेल्फ कॉन्फिडेंस एंड अचीवमेंट इन इंग्लिश ग्रामर ऑफ 9थ क्लास स्टूडेंट्स. *अप्रकाशित पीएच.डी. शोध प्रबंध*. शिक्षा विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा.

यिजीत, सी. 2011. दी इफेक्ट ऑफ 5E टीचिंग मॉडल इन राईटिंग ऑन अचीवमेंट एंड मोटीवेशन. *मास्टर थेसिस*. फॉरेन लैंग्वेज टीचिंग डिपार्टमेंट, टर्की यूनिवर्सिटी, टर्की.

रा.शै.अ.प्र.प. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

रामदास, वी. और जे. शर्मा. 2018. इफेक्ट ऑफ कन्स्ट्रक्टिविस्ट एप्रोच बेस्ड टीचिंग स्ट्रेटेजी ऑन स्टूडेंट्स लिस्निंग स्किल इन इंग्लिश एट सेकेंडरी लेवल. *इंटरनेशनल इनवेंटिव मल्टीडिसीप्लिनरी जर्नल*. 6(2). पृ.सं. 118–124.

लाल, आर.बी. 2013. *भारतीय शिक्षा का विकास एवं उसकी समस्याएँ*. रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ.

विलनुएवा, एल.बी. 2016. दि इफेक्ट ऑफ कन्सट्रक्टिविस्ट एप्रोच इन टीचिंग शॉर्ट स्टोरीज एंड पोयम्स टू द इंग्लिश परफॉरमेंस ऑफ स्टूडेंट्स. *रिसर्चस वर्ल्ड*. 7(1), पृ.सं. 8–19.

शर्मा, एच. 2013. एफेक्टीवनेस ऑफ वीडियो इंस्ट्रक्शनल मटेरियल इन एजुकेशनल साइकोलॉजी इन टर्म्स ऑफ अचीवमेंट एंड रिएक्शन टुवर्ड्स डेवलप्ड मटेरियल ऑफ बी.एड स्टूडेंट्स ऑफ मध्य प्रदेश. *अप्रकाशित पीएच.डी. शोध प्रबंध*. शिक्षा विभाग, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर, मध्य प्रदेश.

शर्मा, एच.एल. और पूनम. 2016. कन्स्ट्रक्टिविस्ट एप्रोच फॉर टीचिंग इंग्लिश : मेकिंग सेंस ऑफ पैराडाइम शिफ्ट फ्रॉम द ट्रेडीशनल एप्रोच. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंस एंड रिसर्च*. 5(10). पृ.सं. 788–792.

शिंदे, एल. 2007. एफेक्टीवनेस ऑफ वीडियो इंस्ट्रक्शनल मटेरियल ऑन रिसर्च मैथेडोलॉजी एंड स्टेटिस्टिक्स इन टर्म्स ऑफ अचीवमेंट एंड रिएक्शन टुवर्ड्स इट ऑफ पोस्टग्रेजुएट स्टूडेंट्स. *अप्रकाशित पीएच.डी. शोध प्रबंध*. शिक्षा विभाग, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर, मध्य प्रदेश.